सनफ्लैग अस्पताल खरीदने की दौड़ से ईएसआईसी बाहर

फ़रीदाबाद (म.मो.) बीते कुछ समय से, सेक्टर 16ए स्थित सनफ्लैग अस्पताल को हरियाणा सरकार द्वारा बेचे जाने की चर्चा चल रही है। यद्यपि इसके मौलिक अलॉटी सनफ्लैग चेरिटेबल ट्रस्ट, इस पर से अपना मालिकाना अधिकार छोड़ने को तैयार नहीं हैं। ट्रस्ट इसके लिये उच्चतम स्तर पर कानूनी लड़ाई लड़ रहा है, इसके बावजूद हरियाणा सरकार ने इसे बेचने के लिये गत माह टैंडर निकाल दिया है।

विक्रय की भनक पाते ही ईएसआई कॉर्पोरेशन जिसका इस शहर में मेडिकल कॉलेज के साथ 600 बेड का अस्पताल भी है, ने इसे खरीदने का प्रयास किया था। कार्पोरेशन सूत्रो से मिली जानकारी के अनुसार आठ एकड़ के प्लॉट पर बने इस बहुमंजिला अस्पताल को लेकर कार्पोरेशन अपना एक बेहतरीन सुपरस्पेशलिटी अस्पताल बनाना चाहती थी। लेकिन अब सूत्रो से जानकारी मिल रही है कि कार्पोरेशन ने अपने प्रयास से हाथ खींच लिया है।

विदित है कि ज्यों ही हरियाणा सरकार ने सनफ्लैग को बेचने का टेंडर निकाला था त्यों ही शहर के कुछ नागरिक संगठन इसके विरोध में सड़कों पर उतर आये थे। उनकी मांग थी कि इस अस्पताल को किसी चिकित्सा व्यापारी को बेचने की बजाय सरकार खुद चलाये। लेकिन जनता की मांग व प्रदर्शनों की रत्ती भर परवाह न करने वाली सरकार ने अपना रुख नहीं बदला, और तो और ईएसआई कॉर्पोरेशन जो कि एक सरकारी संस्थान है, को बेचने से भी गुरेज किया।

समझने वाली बात यह है कि जब कॉर्पोरेशन किसी भी चिकित्सा व्यापारी के मुकाबले इसका दाम नकद भुगतान करने को तैयार थी तो हरियाणा की खट्टर सरकार को इसे किसी चिकित्सा व्यापारी को बेचने में क्या रुचि है? उत्तर बड़ा स्पष्ट है कि आजकल किसी भी संपत्ति का पूरा दाम 'एक नम्बर' में नहीं दिया जाता, आधे के लगभग ही 'एक नम्बर' में व शेष 'दो नम्बर' में लिया-दिया जाता है। सरकारी संस्थान होने के नाते ईएसआई कॉर्पोरेशन केवल 'एक नम्बर' का ही भुगतान कर सकती है। जाहिर है कि संघ संचालित खट्टर सरकार भला 'दो नम्बर' में मिलने वाली सैंकड़ों करोड़ की रकम कैसे छोड़ दे?

समझा जाता है कि डबल ईंजन की सरकार का लाभ उठाते हुये उच्चतम केन्द्रीय स्तर से कॉर्पोरेशन पर दबाव डालकर उसे इस प्रोजेक्ट में अपनी टांग अड़ाने से रोक दिया गया। उपलब्ध जानकारी के अनुसार डॉक्टर एसएस बंसल जिन्होंने कभी मैट्रो अस्पताल की शुरूआत इसी सनफ्लैग अस्पताल के बेसमेंट से की थी, आज वे इस पूरे अस्पताल को हथियाने के लिये जी तोड़ प्रयास कर रहे हैं। जानकार बताते हैं कि इसे लेकर उनकी मुख्यमंत्री खट्टर से भी बात-चीत हो चुकी है।

ईएसआई अस्पताल में ऑपरेशन की प्रतीक्षा में लम्बी लाइने

फ़रीदाबाद (म.मो.) बीते सप्ताह एनएच-3 स्थित ईएसआई मेडिकल कॉलेज अस्पताल में जाने पर इस संवाददाता ने पाया कि आंखों का ऑपरेशन करवाने के लिये सैंकड़ों मरीज़ कई महीनों से भटक रहे हैं, जबकि ऑपरेशन थियेटर खाली पड़े हैं और सम्बन्धित डॉक्टर काम करना चाहते हैं। पूछने पर डॉक्टर साहेबान बताते हैं कि 'ऊपर' से ऑर्डर नहीं है।

लगभग ऐसी ही स्थिति हड्डी सम्बन्धित मरीज़ों की भी सामने आई। एक मरीज़ ने बताया कि उसकी टांग में रॉड डलनी है तो दूसरे ने बताया कि उसके कंधे में भी कोई स्पेयर पार्ट (इम्पलांट लगना है) फ़िलहाल स्टोर में ये स्पेयर पार्टस नहीं हैं और कई महीनों से नहीं हैं। डॉक्टर साहेबान कहते हैं कि या तो इन्तज़ार करो या कहीं बाहर से अपना ऑपरेशन करवा लो।

उक्त दोनों ही मामलों में ईएसआई कॉर्पोरेशन न तो खुद ऑपरेशन करती है और न ही पैनल वाले अस्पतालों को रैफ़र करती है। रैफ़र के नाम पर करती भी है तो एम्स व सफ़दरजंग जैसे अस्पतालों के लिये करती है जिसका कोई औचित्य नहीं। इन अस्पतालों में तो कोई भी कभी भी बिना ईएसआई की सिफ़रिश के जा कर लाइन में लग सकता है।

इस मुद्दे पर जब मेडिकल कॉलेज के डीन, डॉक्टर असीम दास से पूछा गया तो उन्होंने बताया कि आंखों के ऑपरेशन उन्होंने सावधानी वश बंद कर रखे हैं। जैसा कि विदित है यहां कोविड का इलाज चल रहा था, इसलिये उन्हें अभी तक संक्रमण का खतरा है। उन्होंने कहा कि 100 ऑपरेशन सही हो गये और एक बिगड़ गया तो सारे किये-कराये पर पानी फ़िर जायेगा। 100 ऑपरेशन ठीक होने का तो श्रेय कोई मिलेगा नहीं एक के बिगड़ने की बदनामी तुरन्त मिल जायेगी।

अगले सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि बहुत जल्दी ही अस्पताल को सैनेटाइज़ करके ऑपरेशन थियेटर चालू कर देंगे। अपने अस्पताल की कार्यक्षमता पर भरोसा जताते हुये उन्होंने कहा कि एक बार काम शुरू होने पर लम्बी लाईन शीघ्र ही निपटा लेंगे। हड्डियों के ऑपरेशन बारे उन्होंने बताया कि कई बार रेट कॉन्ट्रेक्ट में सामान न मिल पाने पर उसकी कमी आ जाती है लेकिन सूचना मिलने पर वे शीघ्र ही लोकल परचेज करके सामान मंगवा लेते हैं।

हड्डियों के मामले में सर्जन द्वारा आवश्यक इम्पलांट का सही-सही नाप लिखकर देना होता है। इसके बावजूद भी जरूरी नहीं कि ऑपरेशन करते वक्त वह नाप सही ही निकले, इसलिये सावधानी रखते हुये दिये गये नाप से थोड़े ऊपर-नीचे के इम्पलांट भी मंगा कर रखे जाते है। इस मामले पर अब वे खुद गौर करेंगे।

मरीज़ों की एक बड़ी समस्या ऑनलाईन दवा लेने की व्यवस्था बाधित होने की ओर जब उनका ध्यान दिलाया गया तो उन्होंने माना कि अक्सर सर्वर डाउन होने से मरीज़ों को दवा लेने में भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। वे शीघ्र ही इसकी वैकल्पिक व्यवस्था तैयार करने का प्रयास करेंगे। विदित है कि डॉक्टर मरीज़ के लिये जो भी दवा पर्चे पर लिखते हैं उसे ऑनलाईन भी करते हैं।

दवा देने वाला फ़ार्मासिस्ट पर्चा देखने के साथ-साथ कम्प्यूटर पर ऑनलाईन भी देखने के बाद दवा देते है।

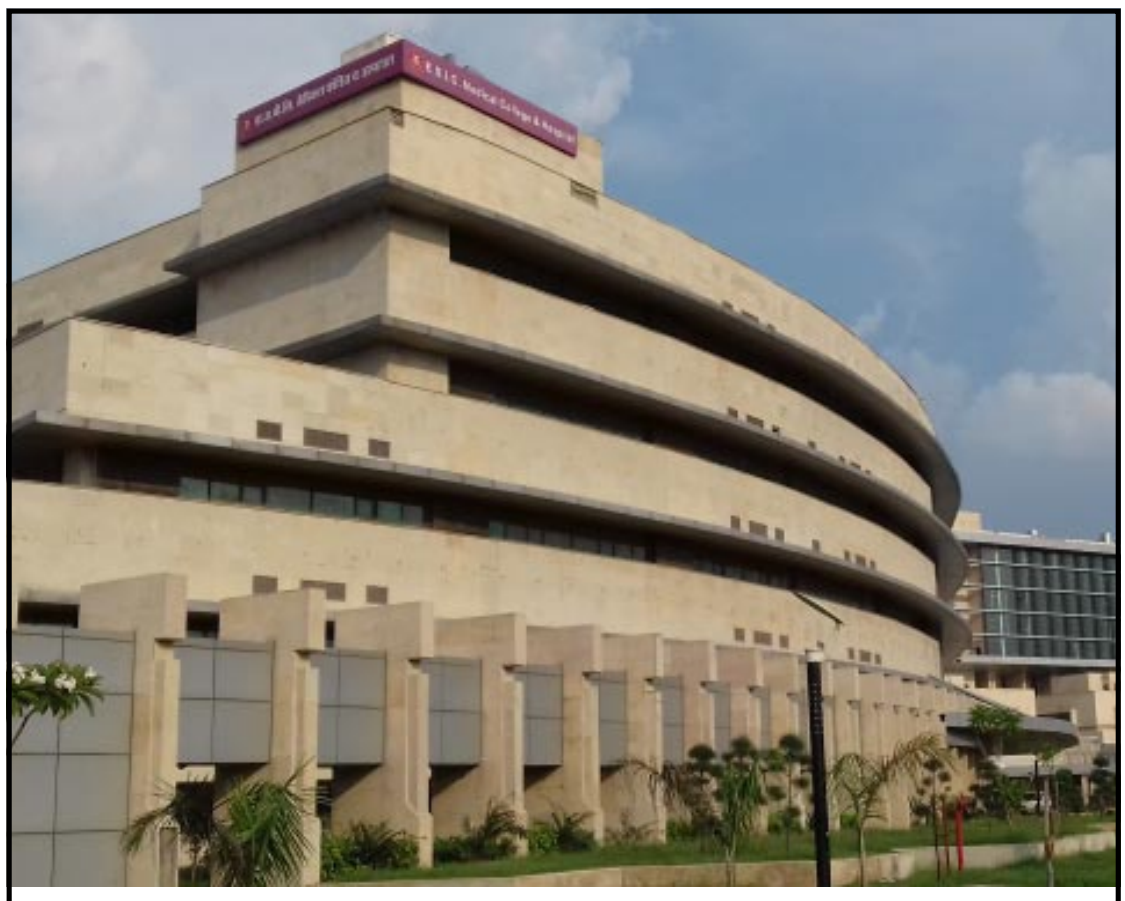

डॉक्टर की लापरवाही से मरीज परेशान

शीतल नामक मरीज़ ने इस संवाददाता को बताया कि वह 12.08.2021 को ईएनटी डॉक्टर को अपना कान दिखाने के लिये 11.30 बजे उनके पास गई थी। डॉक्टर साहिबा ने कहा कि उनके पास इस वक्त वह आवश्यक उपकरण नहीं है जिसके द्वारा कान को देखा जाना है, वे 10-15 मिनट बाहर इन्तजार करें।

वह लगभग एक घन्टा बाहर बैठी रही इस बीच उसने डॉक्टर साहिबा को उठ कर जाते हुये जब देखा तो पूछ लिया कि कितनी देर और लगेगी? डॉक्टर साहिबा ने कहा कि अभी रुको। उसके बाद वे लौट कर नहीं आई। पूछने पर उनके सहयोगियों ने बताया कि वे अब नहीं आयेंगी क्योंकि वे ऑपरेशन करने चली गई हैं। उनको बहुत बुरा लगा और मन मसोस कर अपने घर चली गई। लेकिन डॉक्टर साहिबा को उन्हें उस वक्त किसी वजह से नहीं देखना था तो व्यर्थ में प्रतीक्षा कराने की बजाय अगला कोई समय निर्धारित कर देती तो अच्छा होता।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06